विठ्ठलभाई और वल्लभभाई: स्वतन्त्रता संग्राम में दो भाइयों का योगदान

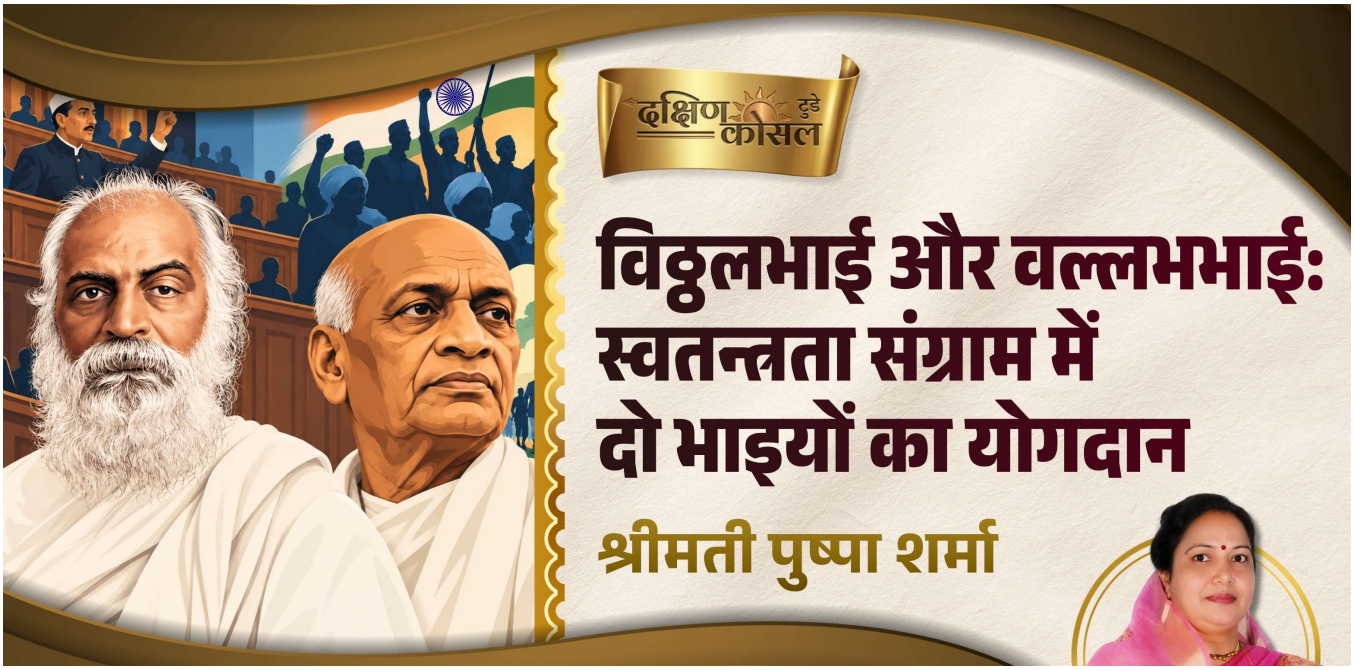

- लेखक : श्रीमती पुष्पा शर्मा
- तारीख : October 31, 2026

महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में सक्रिय होने के बाद गुजरात का वह क्षेत्र, जो लम्बे समय से पाटीदारों की प्रमुख भूमि माना जाता था, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गया। खेड़ा, बारडोली, बोरसद और दांडी नमक सत्याग्रह से जुड़े इस क्षेत्र ने 1918 से 1930 के बीच अहिंसात्मक असहयोग और जनआन्दोलन की अनेक गतिविधियाँ देखीं। इसी कालखण्ड में विठ्ठलभाई और वल्लभभाई पटेल, दोनों भाइयों का राष्ट्रीय जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान सामने आया। पटेल परिवार के अन्य सदस्यों ने भी क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन में भूमिका निभाई, लेकिन विठ्ठलभाई और वल्लभभाई का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। दोनों की कार्यशैली अलग थी, राजनीतिक मार्ग भी कई बार अलग दिखाई देते थे, लेकिन राष्ट्रसेवा उनका साझा उद्देश्य था।

इन दोनों भाइयों के व्यक्तित्व और योगदान को समझने के लिए उनके आपसी सम्बन्ध को जानना भी आवश्यक है। वल्लभभाई ने अपने बड़े भाई विठ्ठलभाई को राष्ट्रीय कार्य के लिए पूर्णतः समर्पित होने का अवसर देने के उद्देश्य से परिवार की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। इस व्यवस्था के विषय में वल्लभभाई ने कहा था:

“हम दोनों भाइयों ने कुछ समय पहले यह निश्चय कर लिया था कि जब तक देश को स्वतंत्रता नहीं मिल जाती, तब तक उसे दो सन्यासियों की आवश्यकता है। इसलिए हमने तय किया कि परिवार की देखभाल का भार हममें से एक उठाएगा, ताकि दूसरा व्यक्ति पूर्णतः राष्ट्रीय सेवा में अपना जीवन समर्पित कर सके। हमने समझा कि हममें से एक को पूरी तरह देश की सेवा में लग जाना चाहिए और दूसरे को परिवार की जिम्मेदारी उठानी चाहिए। इसी के अनुसार मेरे भाई विठ्ठलभाई ने अपना पेशा छोड़कर राष्ट्रीय सेवा का मार्ग अपनाया और परिवार के भरण-पोषण का भार मेरे ऊपर आ गया। वास्तव में यह जिम्मेदारी हम दोनों पर समान रूप से थी, परंतु इस लेन-देन में एक छोटा-सा लाभ मेरा रहा। मैंने अपने भाई को स्पष्ट कह दिया कि परिवार

के पालन-पोषण की पूरी जिम्मेदारी मेरी होगी और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसकी संपत्ति अर्जित करने का मुझे कोई अधिकार नहीं होगा।"

विठ्ठलभाई और वल्लभभाई पटेल: राष्ट्रसेवा से जुड़ा भ्रातृभाव

यह केवल आर्थिक व्यवस्था नहीं थी। इसके पीछे दोनों भाइयों के बीच विश्वास और राष्ट्रीय कार्य के प्रति साझा प्रतिबद्धता भी थी। दोनों के बीच इस समझ को दर्शाने वाली एक घटना का भी उल्लेख मिलता है। एक अवसर पर विठ्ठलभाई को तत्काल कुछ धन की आवश्यकता थी। उनका कोट पास ही खूंटी पर टंगा था। वल्लभभाई ने बिना कुछ कहे उसमें से आवश्यक रुपये निकाल लिए। विठ्ठलभाई विचारों में इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने इसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया। बाद में बातचीत के बीच वल्लभभाई ने उनसे पूछा कि उन्हें कितने रुपये की आवश्यकता थी।

यह प्रसंग दोनों भाइयों के पारिवारिक सम्बन्धों की सहजता और परस्पर विश्वास को सामने लाता है। विठ्ठलभाई ने 1913 में बम्बई परिषद में प्रवेश के बाद सार्वजनिक जीवन को अधिक समय देना प्रारम्भ किया। वे यह समझ चुके थे कि सार्वजनिक जीवन में सार्थक भूमिका निभाने के लिए उन्हें अपना पूरा समय देना होगा। उनका लक्ष्य स्वयं को इस प्रकार विकसित करना था कि वे समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बन सकें। वल्लभभाई ने 1918 के खेड़ा सत्याग्रह के समय महात्मा गांधी के साथ स्वयंसेवक के रूप में सार्वजनिक जीवन में अपनी सक्रिय भूमिका प्रारम्भ की। इसके बाद उनकी वकालत धीरे धीरे पीछे छूटती गई और वे सार्वजनिक कार्यों में अधिक सक्रिय होते गए।

गांधी और वल्लभभाई

वल्लभभाई के राजनीतिक जीवन पर महात्मा गांधी का गहरा प्रभाव था। गांधीजी को उनकी निष्ठा और कार्यक्षमता पर भरोसा था। दूसरी ओर वल्लभभाई भी गांधीजी के नेतृत्व और राजनीतिक दृष्टि में विश्वास रखते थे। गांधीजी के प्रत्यक्ष सहयोगी के रूप में वल्लभभाई की पहचान बनी। अनेक गम्भीर विषयों पर वे गांधीजी से चर्चा करते और उनके विचारों को महत्त्व देते थे। विठ्ठलभाई का सम्बन्ध गांधीजी से सम्मानपूर्ण था, लेकिन वे अपने राजनीतिक निर्णयों में अधिक स्वतन्त्र दिखाई देते थे। वे अपने विचार गांधीजी के सामने बिना झिझक रखते थे। यही दोनों भाइयों की राजनीतिक प्रकृति में एक महत्त्वपूर्ण अन्तर था।

गांधी और वल्लभभाई: जनआन्दोलन से जुड़ा राजनीतिक सम्बन्ध

समान पारिवारिक संस्कार, अलग कार्यशैली

विठ्ठलभाई और वल्लभभाई में अनेक समानताएँ थीं। दोनों का जन्म चरोटर क्षेत्र के पाटीदार परिवार में हुआ। ग्रामीण परिवेश से प्राप्त दृढ़ता, स्पष्टता और व्यवहारिकता उनके व्यक्तित्व में दिखाई देती थी।वल्लभभाई जीवन भर दृढ़ स्वभाव के रहे। उनकी दृष्टि अत्यन्त व्यवहारिक थी। वे घटनाओं को उनके व्यावहारिक परिणामों और उनसे मिलने वाली शिक्षा की दृष्टि से देखते थे।

उन्होंने अपने जीवन में स्वराज को प्रमुख लक्ष्य बनाया। उनके लिए स्वराज का सीधा अर्थ ब्रिटिश प्रभुत्व से स्वतन्त्रता था। वे कल्पनाओं में अधिक नहीं रहते थे, लेकिन परिस्थितियों के दूरगामी परिणामों को समझने की क्षमता रखते थे। विट्ठलभाई की कार्यशैली कुछ भिन्न थी। वे संवैधानिक संघर्षों में विशेष दक्ष थे। विरोधियों की कमजोरियों को समझते थे और आवश्यकता पड़ने पर राजनीतिक कूटनीति का प्रयोग भी करते थे। वे अपनी पूरी रणनीति पहले से सामने रखने के पक्षधर नहीं थे। वल्लभभाई इसके विपरीत अधिक सीधे और स्पष्ट ढंग से काम करते थे। वे विरोधी के साथ भी आवश्यक शिष्टता रखते हुए अपनी बात दृढ़ता से रखते थे। लोगों को अपने पक्ष में लाने की उनमें विशेष क्षमता थी। इस प्रकार दोनों भाई संघर्षशील थे, लेकिन संघर्ष का उनका तरीका अलग था।

कम बोलने वाले, स्पष्ट व्यक्तित्व

विट्ठलभाई और वल्लभभाई दोनों स्पष्ट और सीधे बोलने वाले व्यक्ति थे। सार्वजनिक जीवन में दोनों ने प्रतिष्ठा अर्जित की। वे अनावश्यक रूप से अधिक बोलने के बजाय काम को प्राथमिकता देते थे। विट्ठलभाई के बारे में गुजरात में एक उक्ति प्रचलित थी:

“□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□”

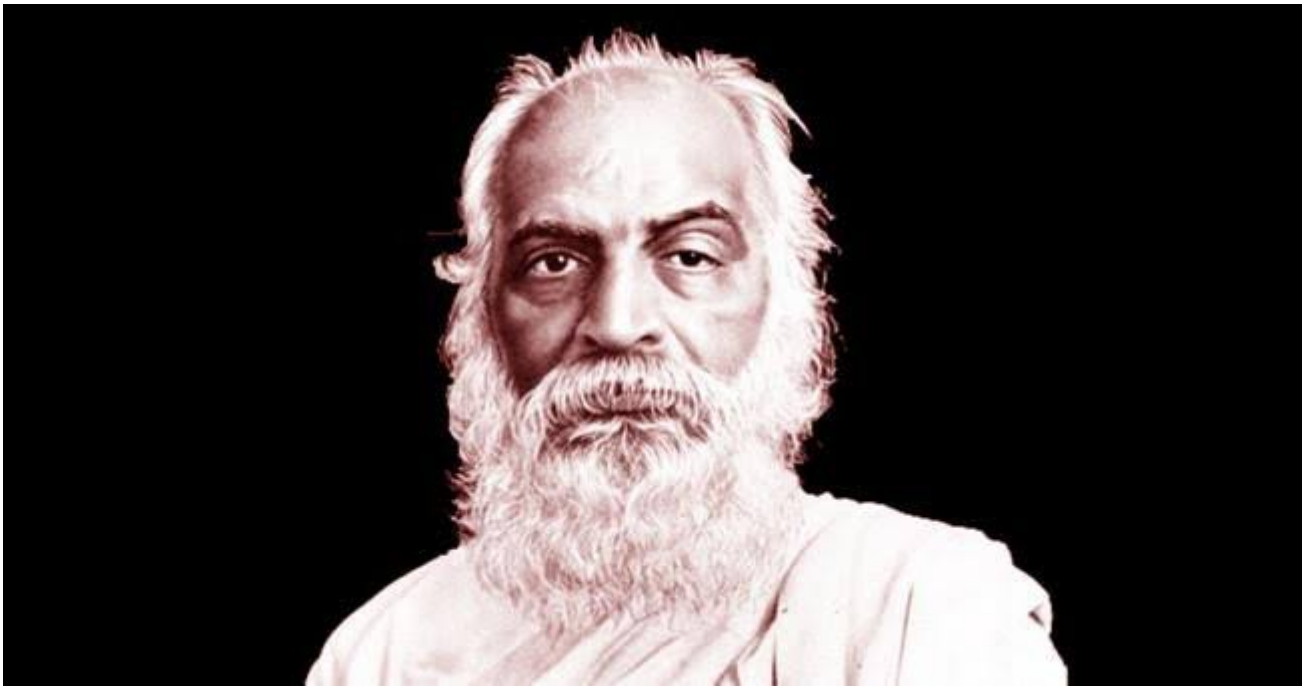

विट्ठलभाई पटेल: संसदीय राजनीति के प्रमुख व्यक्तित्व

अर्थात् आप उनकी दाढ़ी हिलती हुई देखेंगे, लेकिन आवाज शायद ही सुन पाएँ। उनसे किसी विषय पर प्रतिक्रिया माँगी जाती तो वे कई बार केवल “नारायण” कहकर उत्तर देते। उनके परिचितों के बीच यह उनकी विशिष्ट शैली के रूप में स्मरण की जाती थी। वल्लभभाई का जीवन भी गम्भीर उद्देश्य और अनुशासन से जुड़ा रहा। विद्यार्थी जीवन से ही वे अपने काम पर केन्द्रित रहते थे। वे बौद्धिक रूप से सजग और अध्ययनशील थे। किसी राजनीतिक, सामाजिक अथवा अन्य समस्या को उसकी गहराई तक समझने की प्रवृत्ति ने उनमें विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक दृष्टि विकसित की।

राजनीति में दो अलग मार्ग

दोनों भाइयों में समानताएँ जितनी महत्त्वपूर्ण थीं, उनकी भिन्नताएँ भी उतनी ही स्पष्ट थीं। दोनों ने अपने जीवन की शुरुआत वकालत से की और अपने पेशे में सफलता प्राप्त की। बाद में दोनों ने अच्छी आय देने वाली वकालत छोड़कर राष्ट्रीय कार्य को प्राथमिकता दी। दोनों ने स्थानीय निकायों के माध्यम से सार्वजनिक जीवन का अनुभव प्राप्त किया और आगे चलकर राष्ट्रीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया।

लेकिन राजनीतिक कार्यक्षेत्र में दोनों के रास्ते अलग रहे। वल्लभभाई महात्मा गांधी के साथ जनआन्दोलनों और संगठनात्मक कार्यों से अधिक निकटता से जुड़े रहे, जबकि विट्ठलभाई ने अपना महत्त्वपूर्ण समय केन्द्रीय विधान परिषद में बिताया। दोनों की अपनी राजनीतिक दृष्टि और कार्यपद्धति थी। कई बार वे राजनीतिक रूप से एक दूसरे से अलग स्थानों पर खड़े दिखाई देते थे, लेकिन इन मतभेदों के बावजूद उनका मूल उद्देश्य राष्ट्रसेवा ही था।

राजनीतिक मतभेदों के बीच भ्रातृभाव

विट्ठलभाई के निधन के बाद वल्लभभाई स्थायी रूप से बम्बई में रहने आए। अपने बड़े भाई के प्रति उनका सम्मान जीवन भर बना रहा। दोनों भाइयों के राजनीतिक विचारों में पर्याप्त अन्तर था। विट्ठलभाई कभी कभी अपने छोटे भाई को गुजरात का महान व्यक्ति 'सुभा' कहकर चिढ़ाते और अपने मित्रों के बीच हास्य का वातावरण बना देते थे। लेकिन वल्लभभाई अपने बड़े भाई की तीखी टिप्पणियों से भी सामान्यतः विचलित नहीं होते थे। राजनीतिक मतभेदों ने उनके पारिवारिक सम्बन्ध को समाप्त नहीं किया। यही दोनों भाइयों के सम्बन्ध की विशेषता थी।

राष्ट्रीय जीवन में यह प्रसंग विशेष महत्त्व रखता है। विचारों और कार्यपद्धति में अन्तर होते हुए भी व्यक्तिगत सम्मान और साझा उद्देश्य बनाए रखे जा सकते हैं। विट्ठलभाई और वल्लभभाई के सम्बन्ध में यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विट्ठलभाई को तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में अपनी राज्य निर्माण सम्बन्धी क्षमताओं को पूरी तरह सामने लाने के अपेक्षाकृत कम अवसर मिले। उनके व्यक्तित्व को योजनाकार के रूप में देखा गया, जबकि वल्लभभाई की विशेषता योजनाओं को व्यवहार में उतारने की क्षमता में थी। एक को वास्तुकार और दूसरे को निर्माता कहा जा सकता है।

लेकिन इन दोनों भूमिकाओं को अलग करके नहीं देखा जा सकता। राष्ट्र निर्माण में विचार और क्रियान्वयन दोनों आवश्यक होते हैं। विट्ठलभाई और वल्लभभाई पटेल का सम्बन्ध इसी कारण केवल दो भाइयों की पारिवारिक कथा नहीं है। यह इस बात का उदाहरण भी है कि परिवार के भीतर का विश्वास, त्याग और परस्पर सम्मान किस प्रकार व्यापक राष्ट्रसेवा में रूपान्तरित हो सकता है। दोनों के राजनीतिक मार्ग अलग थे, कार्यशैली अलग थी और अनेक विषयों पर मत भी अलग थे, लेकिन अन्ततः उनके सामने एक साझा उद्देश्य था—राष्ट्र प्रेम।

लेख-
श्रीमती पुष्पा शर्मा
अजमेर, राजस्थान